रांची एक्सप्रेस

17 रांची, मंगलवार, 15 नवम्बर 2011

झारखंड स्थापना दिवस परिशिष्ट

11वीं सालगिरह के मौके पर

झारखंड : एक जीती जागती पाठशाला

परिमल नथवाणी

(राज्यसभा सांसद, झारखंड)

'मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं, वह गजल आपको सुनाता हूं' ऐसा किसी शायर ने कहा है। मेरे जेहन में झारखंड की यह अहमियत है। गो जाहिरी तौर पर झारखंड से मेरा रिश्ता 2008 से शुरू हुआ, मुझे लगता है कि यह रिश्ता काफी पुराना है। वैसे तो पूरे हिन्दुस्तान के किसी भी जर्रे पर पैर रखने पर एक खास अपनापन महसूस होता ही है; लेकिन झारखंड की बात कुछ निराली है। झारखंड शब्द की ध्वनि में वह जादू है जिससे कानों को 'मेटलिक' और 'मेलोडियस' दोनों ध्वनियों का अहसास एक साथ होता है; और उसकी गूंज भीतर की गहराइयों तक पहुंचती है।

'झारखंड' का एक अर्थ है - जंगल झाड़वाला इलाका। संस्कृत में एक श्लोक है जिसका एक अर्थ यह भी है 'झारखंड में रहने वाले धातु के बर्तन में दूध पीते है, साल पेड़ के पत्तों में भोजन करते हैं और खजूर के पेड़ के पत्तों से बनी चटाई पर सोते हैं (अयस्क : पात्रे पय:पानम्, साल पत्रे च भोजनम, शयनम् खर्जूरी पात्रे, झारखण्डे विधिवत)।' वर्तमान झारखंड प्रदेश से इस श्लोक का कोई संबंध है या नहीं यह तय करना विद्वानों का काम है। लेकिन इस बात से तो इनकार नहीं हो सकता कि पूरे भारत के जंगलों के अनुपात में झारखंड एक अगुवा राज्य है और वन्य-जीवों के संरक्षण के लिए मशहूर है। यहां की जमीन के तले धातुओं-अयस्कों के भंडार भरे पड़े हैं। इतना ही नहीं, झारखंड भारत की विभिन्न जनजातियों का निवास स्थान है। वह आदिवासियों की गृहभूमि है। झारखंड के जिस निरालेपन का जिक्र मैने किया वह मैं यहां कदम-कदम पर महसूस कर रहा हूं। वर्ष 2008 में मैं अपने चुनावी दौरों के बीच कुछ मंदिरों में गया। यहां पर हनुमान जी की मूर्तियों में मुझे सदा यह अहसास हुआ कि हो सकता है राम चरित मानस में तुलसीदासजी ने जो लिखा है कि आगे चले बहुरि रघुराया, ऋष्यमूक परबत नियराया की ऋष्यमूक पहाड़ी झारखंड में ही यहीं कहीं हो। देश के अन्य हिस्सों में भी मैंने हनुमानजी की महाकाय सिंदूरी मूर्तियां देखी हैं, लेकिन झारखंड के मंदिरों में हनुमानजी की मूर्तियां देखकर यही लगता है कि हनुमानजी, सुग्रीव, बाली, जाम्बवन्त आदि मूलत: झारखंड से ही होने चाहिए। यहां के लोगों की, खासकर के आदिवासियों की चुस्ती-फुर्ती, कठोर परिश्रम, कौशल और बुद्धि-चातुर्य देखकर इस प्रदेश को रामायण के युग से मैं बरबस जोड़ देता हूं। झारखंड के आदिवासी इलाकों और जंगलों में जाकर मेरा यह अहसास यकीन में बदल जाता है।

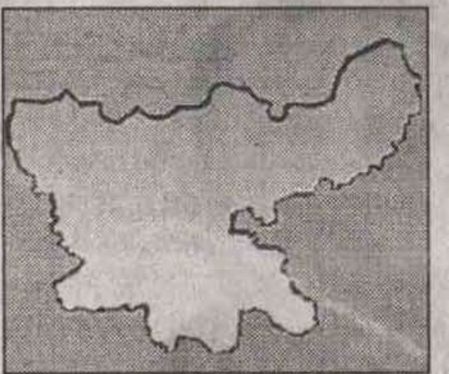

'अकबरनामा' में जिक्र है कि छोटानागपुर सहित उससे जुड़े दूसरे ट्राइबल इलाकों को झारखंड कहा जाता है। मुगल काल में झारखंड क्षेत्र 'कुकरा' नाम से भी जाना जाता था। चन्द्रगुप्त दूसरे के शासनकाल के दौरान चीनी यात्री फाह्यान 399 ई. में बौद्ध ग्रंथों की खोज में भारत आया था। उसने छोटानागपुर क्षेत्र को 'कुक्कुटलाड' कहा। एक अन्य चीनी यात्री युआन च्यांग (630-644 ई.), ईरानी यात्री अब्दुल लतीफ (1600 ई.) ईरानी धर्माचार्य मुल्ला बहबहानी (19वीं सदी) और बिशप हीबर (1824 ई.) आदि के यात्रा वृत्तांतों में छोटानागपुर और राजमहल का जिक्र है। मध्यकाल के इतिहास में चर्चा है कि 'खोखरा' देश में (यानी कि 'कुकरा' अर्थात् झारखंड?) में सोना और हीरे पाये जाते थे। तात्पर्य यह है कि झारखंड की जमीन में खनिजों के भंडार की बहुतायत ऐतिहासिक है। झारखंड मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास की 'जंगल-गाथा' का सशक्त प्रमाण है। आम तौर पर सभ्यता का उद्भव व विकास नदी घाटी और तटवर्ती मैदानी इलाकों में पाया गया है; जिसे मानव सभ्यता की 'जल-गाथा' कहा गया है। लेकिन झारखंड ही वह प्रदेश है जहां सदियों से जंगलों ने ही सभ्यता और संस्कृति की राह जनजीवन को दिखायी। पुरातात्विक और मानव सभ्यता में रूचि रखने वालों के लिए झारखंड एक जीती जागती पाठशाला है। झारखंड के विभिन्न हिस्सों में पुरातात्विक उत्खनन-अन्वेषण हुआ है। यहां पूर्व, मध्य और उत्तर पाषाणकालीन युग के औजार व उपकरण मिले हैं जो इस बात का प्रमाण है कि झारखंड में आदि मानव रहता था जो मानव भी था, महा मानव भी। पृथ्वी की कर्क रेखा झारखंड के ठीक बीचों बीच गुजरती है। उष्ण कटिबंधीय प्रदेश होने के बावजूद झारखंड की आबोहवा में एक विशेष नमी है, ठंडक है जो एक अनोखा अहसास कराती है। मुझे फख्र है कि इस प्रदेश ने राज्यसभा में मुझे भेजा है। प्रदेश के हित में बतौर सांसद मैं पूरी लगने से जुटा हूं - अपनी शक्ति और मर्यादाओं के साथ। मेरे इस काम में मैं कितना सफल और असफल हूं इसका फैसला मैं झारखंड के लोगों पर छोड़ता हूं। लेकिन मेरे जज्बात, मेरी भावनाएं झारखंड से बहुत गहरे जुड़ी हैं, यह निर्विवाद है। स्वतंत्र भारतीय संघ के 28वें राज्य के रूप में झारखंड राज्य की 11वीं वर्षगांठ पर प्रदेश की जनता को मेरी शुभकामना।

RANCHI EXPRESS
Pg. 17 Dt 15/11/11